



3rd - ग्रेड



अध्यापक

लेवल - प्रथम

कार्यालय निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा
राजस्थान बीकानेर

भाग - 4

हिन्दी

3RD GRADE LEVEL - 1

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
हिन्दी		
1.	शब्द-भेद	
	• संज्ञा	1
	• सर्वनाम	6
	• विशेषण	8
	• क्रिया	9
2.	संधि	11
3.	समास	28
4.	शब्द रूपान्तरण	37
5.	शब्द-शुद्धि	50
6.	मुहावरें एवं लोकोक्तियाँ	54
हिन्दी शिक्षण विधियाँ		
1.	हिन्दी भाषा की शिक्षण विधियाँ	78
2.	भाषायी कौशल (सुनना, बोलना, पढ़ना एवं लिखना) एवं भाषायी कौशलों का विकास	111
3.	हिन्दी भाषा शिक्षण के उपागम	119
4.	हिन्दी शिक्षण में चुनौतियाँ	122
5.	हिन्दी शिक्षण अधिगम सहायक सामग्री एवं उनका उपयोग	124
6.	हिन्दी शिक्षण की मूल्यांकन विधियाँ	133
7.	निदानात्मक एवं उपचारात्मक शिक्षण	138

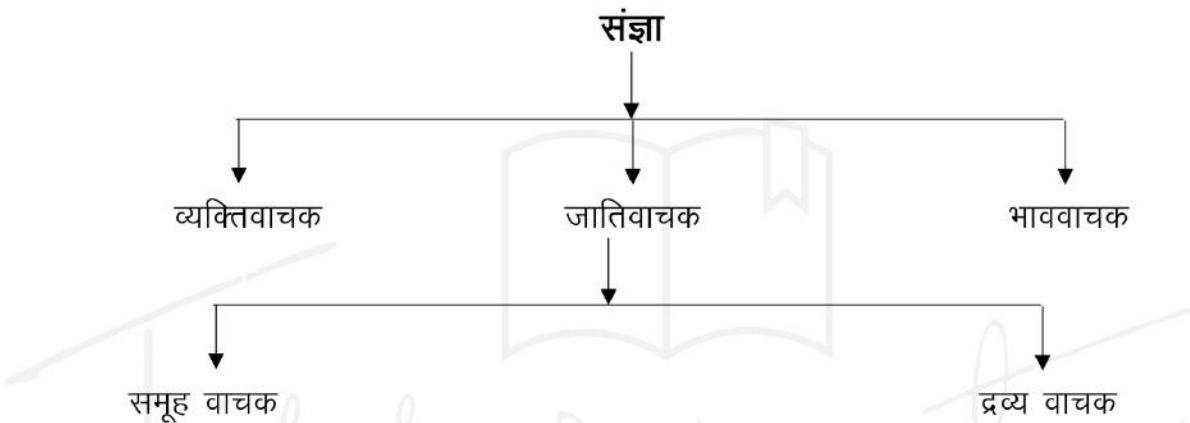
संज्ञा

परिभाषा

- किसी प्राणी, स्थान, वस्तु तथा भाव के नाम का बोध कराने वाले शब्द संज्ञा कहलाती हैं।
- साधारण शब्दों में नाम को ही संज्ञा कहते हैं।
जैसे – अजय ने जयपुर के हवामहल की सुंदरता देखी।
- अजय एक व्यक्ति है, जयपुर स्थान का नाम है, हवामहल वस्तु का नाम है।

संज्ञा के भेद –

संज्ञा के मुख्यतः तीन भेद हैं –



- व्यक्तिवाचक संज्ञा** – जिस संज्ञा शब्द से एक ही व्यक्ति, वस्तु, स्थान के नाम का बोध हो उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।
 - व्यक्तिवाचक संज्ञा विशेष का बोध कराती है सामान्य का नहीं।
 - व्यक्तिवाचक संज्ञा में व्यक्तियों, देशों, शहरों, नदियों, पर्वतों, त्योहारों, पुस्तकों, दिशाओं, समाचार-पत्रों, दिन, महीनों के नाम आते हैं।
- जातिवाचक संज्ञा** – जिस संज्ञा शब्द से किसी जाति के संपूर्ण प्राणियों, वस्तुओं, स्थानों आदि का बोध होता है, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।
प्रायः जातिवाचक वस्तुओं, पशु-पक्षियों, फल-फूल, धातुओं, व्यवसाय संबंधी व्यक्तियों, नगर, शहर, गाँव, परिवार, भीड़ जैसे समूहवाची शब्दों के नाम आते हैं।

व्यक्तिवाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा
प्रशान्त महासागर	महासागर
भारत, राजस्थान	देश, राज्य
रामचन्द्र शुक्ल, महावीर द्विवेदी	इतिहासकार, कवि
रामायण, ऋग्वेद	ग्रंथ, वेद
अजय की भैंस	भदावरी, मुर्दा
हनुमानगढ़, नोहर	जिला, उपखण्ड
ग्राण्ड ट्रंक रोड़	रोड़, सड़क

3. भाववाचक संज्ञा – जिस संज्ञा शब्द में प्राणियों या वस्तुओं के गुण, धर्म, दशा, कार्य, मनोभाव, आदि का बोध हो उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

- प्रायः गुण-दोष, अवस्था, व्यापार, अमूर्त भाव तथा क्रिया भाववाचक संज्ञा के अन्तर्गत आते हैं।
- भाववाचक संज्ञा की रचना मुख्यतः पाँच प्रकार के शब्दों से होती है।
 1. जातिवाचक संज्ञा से
 2. सर्वनाम से
 3. विशेषण से
 4. क्रिया से
 5. अव्यय से

जातिवाचक संज्ञा से बने भाववाचक संज्ञा शब्द

जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
बच्चा	बचपन
शिशु	शैशव
ईश्वर	ऐश्वर्य
विद्वान	विद्वता
व्यक्ति	व्यक्तित्व
मित्र	मित्रता
बंधु	बंधुत्व
पशु	पशुता
बूढ़ा	बुढ़ापा
पुरुष	पुरुषत्व
दानव	दानवता
इंसान	इंसानियत
सती	सतीत्व
लड़का	लड़कपन
आदमी	आदमियत
सज्जन	सज्जनता
गुरु	गौरव
चोर	चोरी
ठग	ठगी

विशेषण से बने भाववाचक संज्ञा शब्द

विशेषण	भाववाचक संज्ञा
बहुत	बहुतायत
न्यून	न्यूनता
कठोर	कठोरतर
वीर	वीरता
विधवा	वैधव्य
मूर्ख	मूर्खता
चालक	चालाकी
निपुण	निपुणता
शिष्ट	शिष्टता
गर्म	गर्मी
ऊँचा	ऊँचाई
आलसी	आलस्य
नम्र	नम्रता
सहायक	सहायता
बुरा	बुराई
चतुर	चतुराई
मोटा	मोटापा
शूर	शौर्य / शूरत
स्वस्थ	स्वास्थ्य
सरल	सरलता
मीठा	मिठास
आवश्यक	आवश्यकता
निर्बल	निर्बलता
हरा	हरियाली
काला	कालापन / कालिमा
छोटा	छुटपन
दुष्ट	दुष्टता

क्रिया से बनें भाववाचक संज्ञा शब्द

क्रिया	भाववाचक संज्ञा
बिकना	बिक्री
गिरना	गिरावट
थकना	थकावट
खेलना	खेल
हारना	हार
भूलना	भूल
पहचानना	पहचान
खेलना	खेल
सजाना	सजावट
लिखना	लिखावट
जमना	जमाव
पढ़ना	पढ़ाई
हंसना	हँसी
भूलना	भूल
उड़ना	ऊड़ान

अव्यय से बनें भाववाचक संज्ञा शब्द

अव्यय	भाववाचक संज्ञा
उपर	उपरी
समीप	सामीप्य
दूर	दूरी
धिक्	धिक्कार
निकट	निकटता
शीघ्र	शीघ्रता
मना	मनाही

- 'अन' प्रत्यय से जुड़े शब्द भाववाचक संज्ञा शब्द माने जाते हैं।
जैसे – व्याकरण वि + आ + कृ + अन
कारण कृ + अन
 - कुछ विद्वानों ने संज्ञा के दो अन्य भेद भी स्वीकार किये हैं।
1. **समुदायवाचक संज्ञा** – ऐसे संज्ञा शब्द जो किसी समूह की स्थिति को बताते हैं। समुदाय वाचक संज्ञा कहलाते हैं। जैसे – सभा, भीड़, ढेर, मण्डली, सेना, कक्षा, जुलूस, परिवार, गुच्छा, जत्था, दल आदि।
 2. **द्रव्य वाचक संज्ञा** – किसी द्रव्य या पदार्थ का बोध कराने वाले शब्दों को द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं।
जैसे – दूध, धी, तेल, लोहा, सोना, पत्थर, आक्सीजन, पारा, चाँदी, पानी आदि।
- नोट** – जातिवाचक संज्ञा का कोई शब्द यदि वाक्य प्रयोग में किसी व्यक्ति के नाम को प्रकट करने लगे तो वहाँ व्यक्तिवाचक संज्ञा मानी जाती है।

आजाद – भारत की स्वतंत्रता में चन्द्रशेखर आजाद ने महत्त योगदान दिया था।

सरदार – सरदार वल्लभ भाई पटेल ने भारत को जोड़ने की महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

गाँधी – गाँधीजी ने असहयोग आंदोलन को शुरू किया था।

- ओकारान्त बहुवचन में लिखा विशेषण शब्द विशेषण न मानकर जातिवाचक संज्ञा शब्द माना जाता है।
जैसे –

गरीब

गरीबों

बड़ा

बड़ों

अमीर

अमीरों



सर्वनाम

परिभाषा – भाषा में सुंदरता, संक्षिप्तता, एवं पुनरुक्ति दोष से बचने के लिए संज्ञा के स्थान पर जिस शब्द का प्रयोग किया जाता है, वह सर्वनाम कहलाता है।

- सर्वनाम शब्द सर्व + नाम के योग से बना है जिसका अर्थ है – सब का नाम।
- सभी संज्ञाओं के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं। सर्वनाम के प्रयोग से वाक्य में सहजता आ जाती है।
जैसे – अमर आज विद्यालय नहीं आया क्योंकि वह अजमेर गया है।
- संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।

सर्वनाम के भेद – सर्वनाम के कुल 06 भेद हैं

1. पुरुषवाचक
2. निश्चय वाचक
3. अनिश्चय वाचक
4. संबंध वाचक
5. प्रश्न वाचक
6. निजवाचक

1. **पुरुषवाचक सर्वनाम** – वे सर्वनाम शब्द जिसका प्रयोग वक्ता, श्रोता, अन्य तीसरा (कहने वाला, सुनने वाला, अन्य) जिसके लिए कहा जाए, के लिए प्रयुक्त होने वाले शब्द पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

पुरुषवाचक सर्वनाम को भी तीन भागों में बाँटा गया है



(i) **उत्तम पुरुष** – बोलने वाला / लिखने वाला

जैसे – मैं, हम, हम सब।

(ii) **मध्यम पुरुष** – श्रोता/सुनने वाला

जैसे – तू, तुम, आप, आप सब।

(iii) **अन्य पुरुष** – बोलने वाला व सुनने वाला जिस व्यक्ति या तीसरे के बारे में बात करें वह अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाता है।

जैसे – यह, वह, ये, वे, आप।

2. **निश्चय वाचक सर्वनाम** – वे सर्वनाम शब्द जो पास या दूर स्थित व्यक्ति या पदार्थ की ओर निश्चितता का बोध कराते हैं। वे निश्चय वाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

पास की वस्तु के लिए – यह

दूर की वस्तु के लिए – वह

3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम – वे सर्वनाम शब्द जिससे किसी व्यक्ति या वस्तु के बारे में निश्चयता का बोध नहीं होता है। अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

जैसे – कोई

- सजीवता के लिए – ‘कोई’ का प्रयोग
- निर्जीवता के लिए – ‘कुछ’ का प्रयोग
- रमन को कोई बुला रहा है।
- दूध में कुछ गिरा है।

4. संबंधवाचक सर्वनाम – दो उपवाक्यों के बीच आकर सर्वनाम का संबंध दूसरे उपवाक्य के साथ दर्शाने वाले सर्वनाम संबंधवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

जैसे – जिसकी लाठी उसकी भैंस।

जो मेहनत करेगा वो सफल होगा।

5. प्रश्नवाचक सर्वनाम – जिस सर्वनाम शब्द का प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए किया जाता है वह प्रश्नवाचक सर्वनाम कहलाता है।

जैसे – वहाँ गलियारे से होकर कौन जा रहा था ?

कल तुम्हारे पास किसका पत्र आया था ?

6. निजवाचक सर्वनाम – ऐसे सर्वनाम शब्द जिसका प्रयोग स्वयं के लिए किया जाता है, निजवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

जैसे – आप, स्वयं, खुद।

जैसे – मैं अपने आप चला जाऊँगा।

सर्वनाम में आप शब्द का प्रयोग विभिन्न सर्वनामों में किया जाता है जिसका सही प्रयोग निम्न तरीकों से जाना जा सकता है।

- (i) अगर ‘आप’ शब्द का प्रयोग ‘तुम’ शब्द के रूप में किया जाता है तो – मध्यम पुरुष वाचक सर्वनाम होगा।
- (ii) ‘आप’ शब्द का प्रयोग स्वयं के अर्थ में होने पर – निजवाचक सर्वनाम होगा।
- (iii) आप शब्द का प्रयोग किसी अन्य व्यक्ति में परिचय करवाने के लिए प्रयुक्त हो तो वाक्य में अन्य पुरुष वाचक सर्वनाम होगा।

विशेषण

परिभाषा

शंज्ञा या शर्वनाम की विशेषता बतलाने वाले शब्दों को विशेषण कहा जाता है।

जो शब्द विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहा जाता है और जिसकी विशेषता बताई जाती है, उसे विशेष्य कहा जाता है।

जैसे - छोटा जादूगर करतब दिखा रहा है।
यहाँ छोटा शब्द विशेषण है तथा जादूगर विशेष्य (शंज्ञा) है।

विशेष - विशेषण की पहचान का तरीका
किसी भी वाक्य में कैंसा / कैंसी / कैंसे अथवा कितना / कितनी / कितने शब्दों से प्रश्न किये जाने पर इसके उत्तर के रूप में जो कोई भी शब्द लिखा जाता है। यह विशेषण माना जाता है।

जैसे -

- (i) अंकित कैंसा लडका है ?
उत्तर - अंकित अच्छा/बुरा/भला/शैतान/चंचल लडका है।
- (ii) हरी तुम्हारे पास कितनी गायें हैं ?
उत्तर - मेरे पास पाँच/दस/सौ/हजारों गायें हैं।

विशेषण के भेद - विशेषण मूलतः चार प्रकार के होते हैं।

1. गुणवाचक विशेषण
2. संख्यावाचक विशेषण
3. परिमाणवाचक विशेषण
4. संकेतवाचक (शार्वनामिक) विशेषण

1. गुणवाचक विशेषण

ऐसे विशेषण शब्द जो किसी पदार्थ के रंग, रूप, गुण, दोष, आकार, दशा, स्थिति, स्थान, काल, समय, आदि की विशेषता को प्रकट करते हैं, वहाँ गुणवाचक विशेषण माना जाता है।
जैसे - कृष्णमृग, सुन्दर बालिका, भले लोग, गंदी बस्ती, बड़ा लडका, पुराना मकान आदि

2. संख्यावाचक विशेषण

जो विशेषण शब्द किसी पदार्थ की संख्या को प्रकट करे। एक, दूँसी, चौथी, दोनों, शतक, दर्जनों, अनेक आदि।

3. परिमाण वाचक विशेषण

ऐसे विशेषण शब्द जो किसी पदार्थ में मात्रा को प्रकट करते हैं उनमें परिमाण वाचक विशेषण माना जाता है।
जैसे - दो लीटर तेल, हजार टन गेहूँ, थोड़ा सा पानी

4. शार्वनामिक या संकेतवाचक विशेषण

विशेषण के रूप में प्रयुक्त होने वाले शर्वनाम को शार्वनामिक विशेषण कहते हैं।
जैसे - (i) यह किताब मेरी है। (ii) वह लडका खाना खा रहा है। (iii) जो लोग मेहनत करते हैं वे अवश्य अपनी मंजिल पाते हैं।

विशेषण के अन्य भेद

- (i) व्यक्तिवाचक विशेषण
- (ii) भिन्नतावाचक विशेषण

विशेषण की अवस्थाएँ - (3)

- (i) मूलावस्था - जो विशेषण शब्द अपने मूल रूप में लिखा जाता है।
जैसे - अतुल एक अच्छा लडका है।
- (ii) उदात्तावस्था - जब कोई विशेषण शब्द दो पदार्थों की तुलना करने के लिए प्रयुक्त होता है।
जैसे - (i) गंगा यमुना से पवित्र नदी है।
(ii) मानसी पटुतर लडकी है।

पहचान - जब किसी विशेषण शब्द से पहले से शब्द लिखा हो अथवा विशेषण के बाद तर प्रत्यय जुड़ा हो तो वहाँ उदात्तावस्था मानी जाती है।

- (iii) उत्तमावस्था - जब कोई विशेषण शब्द अनेक पदार्थों में से किसी एक को चुनने में काम आता है, वहाँ उत्तमावस्था मानी जाती है।

पहचान - जब विशेषण शब्द से पहले सबसे शब्द या विशेषण के बाद तम/इष्टा/तरीन प्रत्यय लगा हो वहाँ उत्तमावस्था होगी।

- जैसे - (i) रबेहा कक्षा की पटुतम बालिका है।
(ii) नवीन सबसे अच्छा लडका है।
(iii) विद्यालय में व्यवस्थाएँ बेहतरीन हैं।

प्रविशेषण

ऐसे शब्द जो किसी विशेषण की भी विशेषता को प्रकट करते हैं, वे प्रविशेषण कहलाते हैं।

- जैसे - (i) वह बहुत तेज दौड़ता है।
(ii) अपनी अत्यंत सुंदर बालिका है।

क्रिया

वाक्य में जिस शब्द या शब्द-समूह से किसी कार्य के करने अथवा होने का बोध होता है, उसे क्रिया कहते हैं, जैसे -

- मोहन खाना खा रहा है ।
 - हवा बह रही है । (करना-हवा बहने की क्रिया कर रही है ।)
 - पुस्तक अलमारी में है । (होना)
- उपर्युक्त वाक्यों में 'खा रहा है' 'बह रही है' क्रियापद हैं ।

वाक्य में कर्म की संभावना के आधार पर भेद
अकर्मक और शकर्मक क्रिया - किसी क्रिया के करने हेतु कर्म की आवश्यकता/संभावना होने या न होने के आधार पर क्रिया के मुख्यतः दो भेद हैं - शकर्मक और अकर्मक ।

(क) अकर्मक क्रिया

जिस वाक्य में क्रिया का फल कर्म पर न पड़कर केवल कर्ता पर ही पड़ता है अर्थात् जिस क्रिया के करने में कर्म की आवश्यकता ही नहीं होती है, बिना किसी कर्म के क्रिया सम्पन्न हो सकती है, उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं, जैसे -

- नरेश दौड़ रहा है ।
- चिडिया उड़ रही है ।
- बच्चा रोता है ।

उपर्युक्त वाक्यों में 'दौड़ रहा है', 'उड़ रही है', 'रोता है' क्रियाओं के फल का प्रभाव क्रमशः नरेश, चिडिया और बच्चा कर्ता-पदों पर ही पड़ता है और ये क्रियाएँ बिना किसी कर्म के केवल कर्ता के द्वारा ही सम्पन्न हो सकती हैं ।

(ख) शकर्मक क्रिया

जहाँ क्रिया के घटित होने की प्रक्रिया में कर्म की आवश्यकता होती ही है, उसे शकर्मक क्रिया कहते हैं । शकर्मक क्रिया कर्म के बिना सम्पन्न हो ही नहीं सकती, जैसे -

1. राम पत्र लिखता है ।
2. लडके ने बेर खाए ।
3. मोहित पानी पीता है ।
4. अध्यापक प्रश्न पूछते हैं ।

उपर्युक्त वाक्यों में 'लिखना', 'खाना', 'पीना', 'पूछना' क्रियाओं का प्रभाव क्रमशः पत्र, बेर, पानी व प्रश्न कर्मपदों पर पड़ रहा है, क्योंकि इनके बिना क्रिया पूर्ण हो ही नहीं सकती, अतः

ये शकर्मक क्रियाएँ हैं । शकर्मक क्रिया की पहचान के लिए क्रिया से पहले 'क्या', 'किसको' लगाकर प्रश्न पूछा जाता है और उसका कोई-न-कोई उत्तर अवश्य आता है और वह उत्तर ही कर्म होता है, और वह क्रिया शकर्मक होती है, राम क्या लिखता है ? (पत्र), लडके ने क्या खाए ? (बेर), मोहित ने क्या पिया ? (पानी) ।

क्रिया की पूर्णता के आधार पर भेद

अपूर्ण क्रिया - कुछ क्रियाओं का अपने-आप में अर्थ पूर्ण ही नहीं होता, इसलिए अर्थ पूर्ण करने के लिए किसी अन्य 'पूरक' शब्द पर निर्भर होना होता है जो क्रिया न होकर संज्ञा या विशेषण पद होता है, ऐसी क्रियाओं को अपूर्ण क्रिया कहते हैं, अर्थात् क्रिया अपना अर्थ स्वयं न देकर संज्ञा, विशेषण पद से ही दे पाती है, जैसे-

- अजीत श्याम को मूर्ख समझता है । ('मूर्ख'-विशेषण के बिना क्रिया 'समझता है' का अर्थ स्पष्ट नहीं होगा ।)
- अशोक जी हमारे गुठ थे । (गुठ-संज्ञापद के बिना 'थे' का अर्थ स्पष्ट नहीं होता ।)

स्पष्ट है कि इन वाक्यों में प्रयुक्त पूरक (मूर्ख, गुठ-दोनों संज्ञापद) का लोप कर देने से वाक्य में पूर्णता नहीं आती । ऐसे पूरक कर्मपूरक कहे जाते हैं, जो विशेषण और संज्ञा दोनों ही हो सकते हैं ।

पूर्ण क्रिया - जिस क्रिया-पद से क्रिया का अर्थ स्पष्ट हो जाए, पूरक के रूप में और-क्रियापद (संज्ञा-विशेषण) की आवश्यकता नहीं हो, उसे पूर्ण क्रिया कहते हैं, जैसे -

1. लडका रोता है ।
2. लडका पढ़ता है ।

यहाँ 'रोता है', 'पढ़ता है' क्रियापद से पूर्ण अर्थ निकल जाता है । ये दोनों पद क्रियापद ही हैं । अतः ये पूर्ण क्रियाएँ हैं ।

क्रिया की संरचना के आधार पर भेद

प्रेरणार्थक क्रिया - जहाँ कर्ता खुद क्रिया को न करके दूसरे को क्रिया करने की प्रेरणा देता है वहाँ प्रेरणार्थक क्रिया होती है । यहाँ कर्ता भी क्रिया तो करता है किन्तु वह प्रेरणा देने की क्रिया करता है । प्रेरणार्थक क्रियाओं में 'वा' लगता है ।

- नरेश ने नाई से बाल कटवाए ।
- सुनीता ने अर्चना से पत्र लिखवाया ।
- मोहन ने माली से दूब कटवाई ।

सभी प्रेरणार्थक क्रियाएँ शकर्मक होती हैं ।

मुख्य क्रिया तथा सहायक क्रिया - मुख्य क्रिया के अर्थ को पूरा करने में सहायता करने वाला क्रियापद सहायक क्रिया कहलाता है, जैसे -

- मैं गया हुआ था। (यहाँ गया मुख्य क्रिया है तथा हुआ था सहायक क्रिया है।)
- सुरेश चुन रहा था। (चुन- मुख्य क्रिया है तथा रहा था- सहायक क्रियाएँ)

नामधातु क्रिया - जब संज्ञा एवं विशेषण अर्थात् नामपद शब्दों के अंत में प्रत्यय जोड़ने पर किसी क्रिया का निर्माण होता है, तब वह नामधातु क्रिया होती है। जैसे -

- रैठ ने मकान हथियाया। (हाथ-संज्ञापद)
- मुझ पर दृश्य फिल्माया। (फिल्म-संज्ञापद)
- लडकी बतियाई। (बात संज्ञापद)

पूर्वकालिक क्रिया - जब कर्ता एक कार्य समाप्त कर उठी पल दूसरा कार्य आरम्भ करता है, तब पहली क्रिया पूर्वकालिक क्रिया कहलाती है। पूर्वकालिक क्रिया के अंत में कर लगता है- सीकर, उठकर, जाकर आदि।

- बच्चे दूध पीकर सी गए।
(सीने से पहले दूध पीया।)
- रमेश खाना खाकर विद्यालय गया।
- रमेश खाना खाने के बाद विद्यालय गया।

लेकिन 'रमेश ने खाना खाया और उसके बाद विद्यालय गया' वाक्य में पहली क्रिया पूर्वकालिक नहीं है, बल्कि दोनों ही क्रियाएँ स्वतंत्र क्रियाएँ हैं क्योंकि दोनों क्रियाएँ दो अलग-अलग उपवाक्यों की क्रियाएँ हैं।

तात्कालिक क्रिया - यह क्रिया भी मुख्य क्रिया से पहले सम्पन्न हो जाती है। इसमें और मुख्य क्रिया में समय का अंतर नहीं होता, किन्तु पहली क्रिया के घटने के तत्काल बाद दूसरी क्रिया के घटने का बोध होता है जो 'ही' निपात से संभव होता है।

- वह खाना खाते ही (तात्कालिक क्रिया) सी गया।
- वह नहते ही (तात्कालिक क्रिया) मंदिर चला गया।

संयुक्त क्रिया - जब दो या दो से अधिक क्रिया-धातुओं के योग से क्रियापद बनता है तो उसे संयुक्त क्रिया कहते हैं। संयुक्त क्रिया में कई क्रियाओं के संयुक्त हो जाने से एक क्रिया का अर्थ निकलता है, जैसे -

- वह खाना खा चुका होगा।
- दीक्षा लिखा करती होगी।
- पानी बरसने लगा है।
- मैं यहाँ रोज़ आ जाया करता हूँ।
- दोपहर में लोग सी रहे होते हैं।

इन सभी वाक्यों में पहला क्रियापद मुख्य क्रिया है तथा बाद के सभी क्रियापद सहायक क्रियाएँ हैं और मुख्य क्रिया तथा सहायक क्रियाओं को मिलाकर बने क्रियापद-समूह संयुक्त क्रियाएँ हैं। सहायक क्रिया एक भी हो सकती है। (पढ़ता है) और एक से अधिक भी जैसा कि ऊपर के वाक्यों में है।

विशेष

(1) यदि किसी वाक्य में प्रयुक्त कोई क्रिया स्वतः घटित हो रही हो तो वहाँ उस क्रिया को अकर्मक क्रिया माना जाता है -

जैसे - पेड़ से पत्ता गिर रहा है।
बूढ़-बूढ़ से घडा भरता है।

(2) यदि किसी वाक्य में गत्यार्थक क्रिया का (जाना, चलना) का प्रयोग हो रहा है एवं उसके साथ वाक्य में जाने/जाने/चलने का स्थानवाचक शब्द भी लिखा हो तो वहाँ इन क्रियाओं का अकर्मक माना जाता है।

जैसे - बच्चा घर गया।
वह स्कूल आ रही है।

क्रिया की वृत्ति

वृत्ति का शाब्दिक अर्थ - मनःस्थिति या मूड

वृत्ति के भेद - (7)

- (i) संदेहार्थक वृत्ति
- (ii) संभावनार्थक वृत्ति
- (iii) आज्ञार्थक वृत्ति
- (iv) संकेतार्थक वृत्ति
- (v) निश्चयार्थक वृत्ति
- (vi) इच्छार्थक वृत्ति
- (vii) प्रश्नार्थक वृत्ति

संधि

संधि का अर्थ—मिलान

संधि की परिभाषा

- दो या दो से अधिक वर्णों के मेल से जो विकार उत्पन्न होता है वह संधि कहलाता है अर्थात् जब दो ध्वनियाँ आपस में मिलती हैं तो उसमें रूपान्तर आ जाता है, तब संधि कहलाती है।

जैसे –

प्रत्येक	–	प्रति	+	एक
विद्यालय	–	विद्या	+	आलय
जगदीश	–	जगत	+	ईश
आशीर्वाद	–	आशीः	+	वाद

संधि का परिभाषा

कामता प्रसाद के अनुसार

दो निर्दिष्ट अक्षरों के पास–पास आने के कारण उनके मेल से विकार होता है, उसे संधि कहते हैं।

किशोरीदास वाजपेयी के अनुसार

जब दो या दो से अधिक वर्ण पास–पास आते हैं तो कभी–कभी उसमें रूपान्तर आ जाता है वह संधि कहलाती है।

संधि विच्छेद

- वर्णों के मेल से उत्पन्न ध्वनि परिवर्तन को ही संधि कहते हैं। परिणामस्वरूप उच्चारण एवं लेखन दोनों ही स्तरों पर अपने मूल रूप से भिन्नता आ जाती है। अतः वर्णों/ध्वनि को पुनः मूल रूप में लाना ही संधि विच्छेद कहलाता है।

जैसे–	वर्ण	+	मेल	=	संधि युक्त शब्द
	रमा	+	ईश	=	रमेश
	आ	+	ई	=	ए

- यहाँ (आ + ई) दो वर्णों के मेल से विकार स्वरूप 'ए' ध्वनि उत्पन्न हुई और संधि का जन्म हुआ।

संधि विच्छेद के लिए पुनः मूल रूप में लिखना चाहिए।

जैसे–	शुभ	+	आगमन	–	शुभागमन
	सत्	+	आचरण	–	सदाचरण
	निः	+	ईश्वर	–	निरीश्वर

- संधि के तीन भेद होते हैं–

1. स्वर संधि
2. व्यंजन संधि
3. विसर्ग संधि

1. स्वर संधि

स्वर से स्वर का जब मेल होता है तो उसमें विशेष विकार की स्थिति के उत्पन्न होने को ही स्वर संधि कहा जाता है।

जैसे– विद्यार्थी – विद्या + अर्थी

स्वर संधि के मुख्यतः पाँच भेद होते हैं—

- (i) दीर्घ संधि
- (ii) गुण संधि
- (iii) वृद्धि संधि
- (iv) यण संधि
- (v) अयादि संधि

(i) दीर्घ संधि

- इस संधि में दो समान स्वर मिलकर दीर्घ हो जाते हैं।
- यदि अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ के बाद वे ही लघु या दीर्घ स्वर आ जायें तो दोनों मिलकर आ, ई, ऊ, ॠ हो जाते हैं।

- | | | | | |
|----------------|---|----------|--------|-------------|
| | — | | | (अ + अ = आ) |
| 1. परमार्थ | | परम | अर्थ | |
| | | | | अ + आ = आ |
| 2. कार्य + आलय | = | कार्यालय | | |
| | | | | (आ + अ = आ) |
| 3. परीक्षार्थी | = | परीक्षा | अर्थी | |
| | | | | (आ + आ = आ) |
| 4. महाशय | = | महा | आशय | |
| | | | | (इ + इ = ई) |
| | | रवि | इन्द्र | = रवीन्द्र |
| | | | | (ई + इ = ई) |
| | | शची | इन्द्र | = शचीन्द्र |
| | | | | (इ + ई = ई) |
| | | अभि | ईप्सा | = अभीप्सा |

इ + ई = ई

	+			(उ + उ = ऊ)
(ई		ई		= ई)
नदी		ईश		= नदीश
(उ		ऊ		= ऊ)
लघु		ऊर्मि		= लघूर्मि
(ऊ		ऊ		= ऊ)
वधू		ऊर्मि		= वधूर्मि
				(उ + उ = ऊ)
भानु		उदय		= भानूदय
(ऊ		उ		= ऊ)
वधू		उल्लास		= वधूल्लास
ऋ		ऋ		= ऋ
पितृ		ऋण		= ऋण

दीर्घ संधि के उदाहरण

- | | | |
|---------------|---|----------------|
| 1. अन्नाभाव | — | अन्न + अभाव |
| 2. भोजनालय | — | भोजन + आलय |
| 3. विद्यार्थी | — | विद्या + अर्थी |
| 4. महात्मा | — | महा + आत्मा |
| 5. गिरीन्द्र | — | गिरि + इन्द्र |
| 6. महीन्द्र | — | मही + इन्द्र |
| 7. गिरीश | — | गिरि + ईश |

8. रजनीश	—	रजनी + ईश
9. भानूदय	—	भानु + उदय
10. वधूत्सव	—	वधू + उत्सव
11. रामावतार	—	राम + अवतार
12. सत्यार्थी	—	सत्य + अर्थी
13. रामायण	—	राम + अयन
14. धर्माधर्म	—	धर्म + अधर्म
15. पराधीन	—	पर + अधीन
16. पुण्डरीकाक्ष	—	पुण्डरिक + अक्ष
17. दैत्यारि	—	दैत्य + अरि
18. शताब्दी	—	शत + अब्दी
19. धर्मार्थ	—	धर्म + अर्थ
20. मुरारि	—	मुर + अरि
21. नीलाम्बर	—	नील + अम्बर
22. परमार्थ	—	परम + अर्थ
23. रूद्राक्ष	—	रुद्र + अक्ष
24. स्वाधीन	—	स्व + अधीन
25. गीताजंली	—	गीत + अंजली
26. दीपावली	—	दीप + अवली
27. प्रार्थी	—	प्र + अर्थी
28. छिद्रन्वेषी	—	छिद्र + अन्वेषी
29. मूल्यांकन	—	मूल्य + अंकन
30. अन्त्याक्षरी	—	अंत्य + अक्षरी
31. सापेक्ष	—	स + अपेक्ष
32. अभयारण्य	—	अभय + अरण्य
33. सत्यार्थी	—	सत्य + अर्थी
34. नारायण	—	नार + अयन
35. परमात्मा	—	परम + आत्मा
36. पदावलि	—	पद + अवलि
37. रत्नाकर	—	रत्न + आकर
38. निगमागमन	—	निगम + आगमन
39. पद्माकर	—	पद्म + आकर
40. शरणागत	—	शरण + आगत
41. सत्याग्रह	—	सत्य + आग्रह
42. विद्याध्ययन	—	विद्या + अध्ययन
43. परीक्षार्थी	—	परीक्षा + अर्थी
44. रेखांकित	—	रेखा + अंकित
45. मुक्तावली	—	मुक्ता + अवली
46. दावानल	—	दावा + अनल
47. तथापि	—	तथा + अपि
48. महाशय	—	महा + आशय
49. द्राक्षासव	—	द्राक्षा + आसव
50. विद्यालय	—	विद्या + आलय
51. महात्मा	—	महा + आत्मा
52. प्रेरणास्पद	—	प्रेरणा + आस्पद
53. कवीन्द्र	—	कवि + इन्द्र

54. अतिव	—	अति + इव
55. अभीष्ट	—	अभि + इष्ट
56. अतीत	—	अति + इत
57. महीन्द्र	—	मही + इन्द्र
58. महतीच्छा	—	महती + इच्छा
59. कपीश	—	कपि + ईश
60. प्रतीक्षा	—	प्रति + ईक्षा
61. अधीक्षण	—	अधि + इक्षण
62. अभीप्सा	—	अभि + इप्सा
63. नारीश्वर	—	नारी + ईश्वर
64. सतीश	—	सती + ईश
65. लघूत्तम	—	लघु + उत्तम
66. सूक्ति	—	सु + उक्ति
67. अनूदित	—	अनु + उदित
68. गुरूपदेश	—	गुरु + उपदेश
69. भानूदय	—	भानु + उदय
70. सिंधूर्मि	—	सिंधु + ऊर्मि
71. भानूर्जा	—	भानु + ऊर्जा
72. वधूत्सव	—	वधू + उत्सव
73. चमूत्तम	—	चमू + उत्तम
74. मातृण	—	मातृ + ऋण
75. होतृकार	—	होतृ + ऋकार

(ii) गुण संधि

- जब अ, आ के बाद इ, ई आए तब दोनों मिलकर 'ए' हो जाते हैं।
जैसे— देवेन्द्र — देव + इन्द्र
- अ, आ के बाद उ, ऊ आए तो दोनों मिलकर ओ हो जाते हैं।
जैसे— वीरोचित — वीर + उचित
- अ, आ के बाद ऋ, ॠ आए तो दोनों मिलकर अर् हो जाते हैं।
जैसे— महर्षि—महा + ऋषि

उदाहरण

1. गणेश	—	गण + ईश
2. यथेष्ट	—	यथा + इष्ट
3. रमेश	—	रमा + ईश
4. जलोर्मि	—	जल + ऊर्मि
5. गंगोर्मी	—	गंगा + ऊर्मि
6. कष्वर्षि	—	कष्व + ऋषि
7. शुभेच्छा	—	शुभ + इच्छा
8. नरेश	—	नर + ईश
9. जलोष्मा	—	जल + ऊष्मा
10. सप्तर्षि	—	सप्त + ऋषि
11. नरेन्द्र	—	नर + इन्द्र
12. भारतेन्दु	—	भारत + इन्दु
13. मृगेन्द्र	—	मृग + इन्द्र
14. स्वेच्छा	—	स्व + इच्छा

15. देवेन्द्र	—	देव + इन्द्र
16. प्रेषिती	—	प्र + ईषिती
17. इतरेतर	—	इतर + इतर
18. अंत्येष्टि	—	अन्त्य + इष्टि
19. नृपेन्द्र	—	नृप + इन्द्र
20. महेन्द्र	—	महा + इन्द्र
21. अपेक्षा	—	अप + ईक्षा
22. प्रेक्षक	—	प्र + ईक्षक
23. राकेश	—	राका + ईश
24. गुड़ाकेश	—	गुड़ाका + ईश
25. सूर्योदय	—	सूर्य + उदय
26. सोदाहरण	—	स + उदाहरण
27. आद्योपान्त	—	आद्य + उपान्त
28. प्राप्तोदक	—	प्राप्त + उदक
29. जन्मोत्सव	—	जन्म + उत्सव
30. अन्योक्ति	—	अन्य + उक्ति
31. नीलोत्पल	—	नील + उत्पल
32. परोपकार	—	पर + उपकार
33. सर्वोदय	—	सर्व + उदय
34. अन्त्योदय	—	अन्त्य + उदय
35. महोदय	—	महा + उदय
36. महोत्सव	—	महा + उत्सव
37. जलोर्मि	—	जल + ऊर्मि
38. जलोष्मा	—	जल + ऊष्मा
39. देवर्षि	—	देव + ऋषि
40. हेमन्तर्तु	—	हेमन्त + ऋतु
41. शीतर्तु	—	शीत + ऋतु
42. शिशिरर्तु	—	शिशिर + ऋतु
43. उत्तमर्ण	—	उत्तम + ऋण
44. अधमर्ण	—	अधम + ऋण
45. राजर्षि	—	राज + ऋषि
46. महर्ण	—	महा + ऋण
47. महर्तु	—	महा + ऋतु
48. तवल्कार	—	तल + लृकार

नोट

- स्वर संधि में अगर 'प्र' के बाद ऊढ़/ऊढ़ा, ऊढ़ी आ जाए तो वहाँ गुण संधि न होकर वृद्धि संधि होगी।
जैसे— प्रौढ़—प्र + ऊढ़
- 'अक्ष' शब्द के बाद अगर 'ऊहिनी' शब्द आ जाए तो वहाँ भी गुण संधि न होकर वृद्धि संधि होगी।
जैसे— अक्षौहिणी—अक्ष + ऊहिनी

(iii) वृद्धि संधि

- अ, आ के बाद ए, ऐ आने पर दोनों मिलकर ऐ हो जाता है।
जैसे— एकैक — एक+एक
- अ, आ के बाद ओ, औ आने पर दोनों मिलकर 'औ' हो जाता है।
जैसे— महौषधि — महा + औषधि